डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली
उर्वशी
साधना
एस-सीरिज
अरविन्द प्रकाशन,
जोधपुर

Scanned by CamScanner

अजय कुमार उत्तम

डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली

अरविन्द प्रकाशन
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी
जोधपुर (राजस्थान) - ३४२००१
फोनः ०२९१-३२२०९

Scanned by CamScanner

प्रकाशक : अरविन्द प्रकाशन
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी
जोधपुर (राज.)-३४२००१,फोन:०२९१-३२२०९
संस्करण : १९९३
मूल्य : ५.०० (पांच रुपये)
मुद्रक : ताज प्रेस, ए.-३५/४,मायापुरी,दिल्ली

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका से साभार लेख

क्रम	शीर्षक	पृष्ठ

एस-सीरिज

दो शब्द

भारतीय ज्ञान-विज्ञान अपनी श्रेष्ठता और गहनता के कारण विश्व-विख्यात रहा, और भारतीय विद्याओं की महत्ता आज के वैज्ञानिक युग में भी दिन-प्रतिदिन स्पष्ट हो रही है किंतु यह खेद का विषय है कि यही ज्ञान-विज्ञान अपनी ही धरती पर उपेक्षित और व्यंग की दृष्टि से देखा जाता है, दृष्टिकोण में आए परिवर्तन के साथ-साथ भारतीय ज्ञान की दुरुहता भी एक प्रमुख कारण रही है क्योंकि इसे अपनी ही सम्पत्ति बनाए रखने के प्रयास में न केवल तोड़-मरोड़ की गई अपितु यह नीरस, जटिल और अस्पष्ट भी हो गया तथा समाज ऐसे साहित्य को भय-मिश्रित जिज्ञासा से देखने लग गया।

इस खेद-जनक स्थिति का समापन करने के लिए हमने एक प्रयास किया कि ज्ञान और साधना की सरस ढंग से प्रस्तुति हो और अरविंद प्रकाशन के द्वारा **''एस सीरीज''** में रोचक, तथ्यपरक व ज्ञान-वर्धक साहित्य का प्रकाशन आरम्भ किया। इसके प्रथम सेट के अंतर्गत् छह पुस्तकें प्रकाशित की गईं- **तांत्रिक त्रिजटा**

अघोरी, भुवनेश्वरी साधना, हंसा उड़हूं गगन की ओर, मैं बांहे फैलाए खड़ा हूं, सिद्धाश्रम, एवं अप्सरा साधना एवं सिद्धि। इस सेट की प्रत्येक पुस्तक अपने ढंग की विशिष्ट व रोचक रही। उदाहरण के लिए पाठक वर्ग ने पहली बार ही त्रिजटा अघोरी जैसे प्रबल व्यक्तित्व का परिचय पाया और 'सिद्धाश्रम' के नाम से विख्यात सिद्ध स्थली की प्रामाणिक जानकारी ली। पाठक वर्ग ने इस सेट का उत्साहपूर्ण ढंग से स्वागत किया और साधनात्मक साहित्य के क्षेत्र में व्याप्त जड़ता और नीरसता समाप्त करने का हमारा प्रयास सफल रहा। इन सभी पुस्तकों का आधार पूज्यपाद गुरुदेव से प्राप्त सूत्र एवं उनके गृहस्थ व सन्यस्त शिष्यों के प्रामाणिक अनुभव रहे। अपने-आप में मौलिक व अनुभूत तथ्यों पर आधारित होने के कारण ही ये पुस्तकें जन मानस को गहरे तक जाकर न केवल छू सकीं वरन् उन्हें साधना के लिए भी नई चेतना प्रदान करने में समर्थ रहीं। ऐसा सब कुछ संभव होने में हमें कोई आश्चर्य नहीं रहा क्योंकि न केवल इन पुस्तकों के वरन् इन सभी शिष्यों के पीछे जो चैतन्य व्यक्तित्व है, जिनके ज्ञान और निर्देशन में इन सभी साधकों ने साधनाएं सम्पन्न कर सिद्धि पायी है, और अनेक रोमांचक अनुभव प्राप्त किए हैं (और जो इन पुस्तकों का आधार बने)

उनका नाम है **डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली जी** जो अपने सन्यासी शिष्यों के मध्य परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी के रूप में विख्यात हैं। एक ही व्यक्तित्व में ज्ञान की अनेक धाराएं समाहित देख कर वास्तव में आश्चर्यचकित रह जाना पड़ता है। पूज्यपाद गुरुदेव के व्यक्तित्व से जुड़ी सैकड़ों-हजारों, घटनाओं के आधार पर यदि उनके शिष्यों के अनुभव एकत्र किए जाएं तो वह एक विशाल ग्रंथ का आकार ले लेगा।

वर्तमान में हमने इसी विशाल ज्ञान-भंडार में से पाठकों की रुचि व हित को ध्यान में रखकर इस द्वितीय सेट का निर्माण किया है। जिसके अन्तर्गत् **जगदम्बा साधना, सौंदर्य, शिव साधना, उर्वशी, स्वर्ण सिद्धि, तारा साधना, तंत्र साधना एवं हिप्नोटिज्म,** शीर्षक से आठ पुस्तकें प्रकाशित की गई हैं। अपने लघु-कलेवर में भी प्रत्येक पुस्तक सम्बन्धित विषय से पूर्ण ज्ञान समेटे ही है साथ ही अत्यंत सहज और बोधगम्य शैली में--

"**जगदम्बा साधना**" में भगवती दुर्गा से सम्बन्धित शक्ति साधनाएं गोपनीय रहस्यों के साथ प्रकाशित की गई हैं, जिनसे तो शास्त्र के ज्ञाता भी अनभिज्ञ होगें, "**सौन्दर्य**" के अन्तर्गत् जीवन में

सौन्दर्य की आवश्यकता और प्राप्ति का प्रामाणिक विवरण **"शिव साधना"** के अन्तर्गत् भगवान शिव से सम्बन्धित अत्यंत दुर्लभ साधनाएं, **"उर्वशी"** के अन्तर्गत् अप्सरा का पूर्ण विवरण व साधना, **"स्वर्ण सिद्धि"** के अन्तर्गत् स्वर्ण निर्माण से सम्बन्धित गोपनीय शास्त्रों का प्रकाशन, **"तारा साधना"** के अन्तर्गत् धन प्राप्ति की अचूक साधना **"तंत्र साधना"** के अन्तर्गत् जीवन को संवारने के कई दुर्लभ प्रयोग तथा **'हिप्नोटिज्म"** के अन्तर्गत् सम्मोहन विज्ञान के सफल सूत्र पूर्ण प्रामाणिकता से वर्णित किए गए हैं।

हमें आशा है कि प्रथम सेट की ही भांति यह द्वितीय सेट भी पाठकों की रुचि के अनुकूल तथा जीवन में लाभ प्रदान करने में समर्थ होगा।

-- **प्रकाशक**

उर्वशी मेरी प्रेमिका

उर्वशी नाम का उच्चारण करते ही यौवन भार से लदी हुई इक्कीस वर्षीया अद्वितीय सुंदरी का स्मरण हो आता है, जो इंद्र की सभा की अप्सरा है, जो एक सौ आठ अप्सराओं में सर्वश्रेष्ठ है, जिसकी कमनीय कोमल काया बेंत की तरह लचक जाती है, जिसके अंग-अंग से यौवन की आभा फूटती रहती है, जिसकी आंखों में गजब का आकर्षण और सम्मोहन है, जो किसी भी युवक के चित्त को बांध सकने में समर्थ है, जिसमें रूप और सौन्दर्य का अद्‌भुत सामंजस्य है, जिसके पैरों में पहने हुए घुंघुरुओं की रुन-झुन से लाखों

देवता, यक्ष, गंधर्व, किन्नर और मनुष्यों के प्राण अटके रह जाते हैं और जिसके शरीर से निरंतर अद्वितीय अपूर्व अष्टगंध निकलती रहती है, जिसकी सुगंध से प्रत्येक प्राणि मोहित होता हुआ उसे पाने के लिए तड़फ कर रह जाता है।

अप्सरा की साधना जहां देवताओं के लिए उचित मानी गई है, वहां मनुष्यों के लिए भी अनुकूल कही गई है क्योंकि अप्सराएं स्वयं मनुष्यों की तरफ आकर्षित रहती हैं, वे स्वयं युवकों का सानिध्य चाहती हैं, देवलोक में और देवताओं के बीच रहती हुई वे ऊब गई हैं, देवताओं के स्थूल शरीर आत्मघाती हैं, अप्सरा तो नवीनता चाहती है कि कोई मनुष्य साधना करके उसे प्राप्त करे, अप्सरा स्वयं ऐसे व्यक्ति के साथ समय बिताने के लिए आतुर है, प्रयत्नशील है, आवश्यकता है साधना के द्वारा उसे प्राप्त करने की।

यों तो साधारण मानव पुत्री से भी विवाह करने के लिए उसको देखना, उसके मां-बाप से उसकी बातचीत चलाना, विवाह की तिथि तय करना, फेरे खाना आदि साधनाएं करनी पड़ती हैं, तभी वह मानव पुत्री पत्नी रूप में प्राप्त हो पाती है फिर उर्वशी तो अप्सरा है, चिर यौवनमय है, उसे पाने के लिए भी तो साधना की

आवश्यकता होती है और जो साधक वास्तव में ही समर्थ होते हैं, जो यौवनरस से ओत-प्रोत हैं, जिसके हृदय में उमंग की लहरें प्रवाहित हैं, वे अवश्य ही उर्वशी साधना संपन्न करते हैं और उसे प्रेमिका रूप में प्राप्त कर जीवन को आनंद, मस्ती और उमंग से तरोताजा बना देते हैं।

उर्वशी साधना संपन्न करने पर प्रेमिका रूप में उसे प्राप्त करने से शरीर की दुर्बलता और कमजोरी स्वतः समाप्त हो जाती है, उसकी पौरुषता बढ़ जाती है, उसकी आंखों में चमक और चेहरे पर ओज आ जाता है, सारे शरीर में यौवन का समुद्र लहराने लग जाता है और वह मनुष्य आकर्षक, सुंदर, यौवन रस से भरपूर और उर्वशी की आंखों में छा जाने वाला बन जाता है, ऐसे युवक को देखकर जब अप्सराएं मोहित और पागल हो जाती हैं, जब वे जीवन भर के लिए प्रेमिका रूप में उनके साथ रहने के लिए उद्यत्त हो जाती हैं, तो फिर मनुष्यों की तो बात ही क्या, उसका चौड़ा वक्षस्थल, लम्बी भुजाएं, आकर्षण युक्त चेहरा, काले बाल, लम्बा कद और पूर्ण पौरुषता देख कर कोई भी मर मिटने के लिए तैयार हो जाता है और यह सब उर्वशी साधना करने से स्वतः प्राप्त हो जाता है।

पुरुरवा

उर्वशी और पुरुरवा की कहानी तो विश्व विख्यात है, पुरुरवा भी तो मनुष्य ही था, जिसने साधना संपन्न कर उर्वशी को प्रेमिका रूप में सिद्ध किया था।

जिस समय पुरुरवा ने यह साधना सिद्ध की थी, तब उसकी उम्र ढलने लगी थी, बाल सफेद हो गए थे, शरीर में कमजोरी अनुभव होने लगी थी, परंतु उसके मन में यौवन का सागर लहलहा रहा था और उसने उर्वशी को प्रेमिका रूप में सिद्ध किया, ज्यों ही साधना समाप्त की त्यों ही अनिद्य सौन्दर्यवती उर्वशी उसके पास आकर बैठी और अपने हाथों में लिए हुए ताजे गुलाब के पुष्पों की माला पुरुरवा के गले में डाली तो एक दम से पुरुरवा के सारे शरीर में विद्युत प्रवाह सा हो गया, उसकी आंखों में चमक आ गई, बाल काले हो गए और शरीर की स्थूलता तथा कमजोरी मिट गई।

पुरुरवा ने लिखा है कि **उस एक क्षण में ही उसके सारे शरीर में यौवन और पौरुष का ऐसा सागर लहराने लगा कि वह अपने- आपे में नहीं रहा, उसने एक क्षण के लिए उर्वशी को देखा तो लगा कि इक्सीस वर्षीया सौन्दर्य का साकार पुंज उसके पास घुटने से घुटना सटा कर बैठी है** और उसकी आंखों में निमंत्रण

का भाव है, और दूसरे ही क्षण पुरुरवा ने उसे अपनी बांहों में भर लिया।

कई वर्षों तक यह प्रणय संबंध चलता रहा, उर्वशी ने पुरुरवा को धन, जवाहरात, वस्त्राभूषण आदि से परिपूर्ण कर दिया, पुरुरवा भूल - चूक से भी यदि कोई इच्छा करता तो दूसरे ही क्षण वह पूर्ण हो जाती।

पुरुरवा ने एक अत्यन्त महत्वपूर्ण पुस्तिका लिखी है, जो उर्वशी साधना के नाम से प्रसिद्ध है, कई वर्षों से इस पुस्तिका की खोज थी, पर बाद में शोधकर्ताओं ने यह मान लिया कि यह पुस्तक काल के गर्त में समाप्त हो गई, परंतु पिछले ही दिनों सिद्धाश्रम सम्प्रक्त स्वामी हरिहरानंद जी मिले, उनके हाथ में इस पुस्तक की हस्तलिखित प्रति थी, जिसमें उर्वशी साधना का सांगोपांग वर्णन था।

पाठक इस साधना को सम्पन्न कर सकते हैं और फिर जीवन में असम्भव नाम की तो कोई चीज ही नहीं है, यदि व्यक्ति निश्चय कर ले तो कुछ भी कर सकता है, फिर यह साधना तो अत्यन्त सरल है।

उर्वशी साधना विधि

यह साधना शुक्रवार से प्रारम्भ की जाती है और तीन दिन की साधना है, मगर पहले दिन की साधना

शुक्रवार की रात्रि को होती है, इसके बाद अगले शुक्रवार को फिर साधना सम्पन्न की जाती है और उसके बाद फिर तीसरे शुक्रवार को इस साधना की समाप्ति होती है।

साधक रात्रि को एक तेल का तथा एक घी का दीपक जला कर, सामने उर्वशी यंत्र एवं चित्र को स्थापित करके साधक स्वयं पीले आसन पर बैठ जाए और पीले वस्त्र धारण करे, साधक अपने गले में गुलाब के पुष्पों का हार पहन ले और कपड़ों पर हीने का इत्र लगाए, इसके बाद मंत्र सिद्ध अप्सरा माला से इक्कीस माला मंत्र जप करे।

मंत्र

ॐ श्रीं उर्वशी आगच्छागच्छ स्वाहा।

मंत्र जप समाप्ति के बाद वहीं पर साधक सो जाए, इसी प्रकार अगले शुक्रवार को भी करे, नित्य करने की जरूरत नहीं है, फिर तीसरे शुक्रवार को भी मंत्र जप करें, पर तीसरे शुक्रवार को गुलाब की एक माला स्वयं धारण करें, तथा एक माला पास में किसी थाली में रख दे।

जब उर्वशी प्रत्यक्ष उपस्थित हो जाए और

आपके शरीर को उसका स्पर्श अनुभव होने लगे, तब अपने गले में पहनी हुई माला उसके गले में डाल दें, ऐसी स्थिति में पास में पड़ी हुई, दूसरी माला उर्वशी स्वयं अपने हाथों से साधक के गले में पहना देती है।

इसके बाद साधक वचन ले ले कि जीवन पर्यन्त वह प्रेमिका रूप में उसके साथ रहेगी और सभी तरह से पूर्णता प्रदान करेगी।

यह साधना स्वामी जी के शब्दों में अचूक है और उन्होंने कई साधकों को यह साधना सम्पन्न कराई है तथा पहली ही बार में उन्हें सफलता मिली है।

अप्सरा

पूर्ण सिद्ध करने का गोपनीय प्रयोग

जीवन में कोई कार्य किसी उद्देश्य प्राप्ति हेतु ही किया जाता है, यह उद्देश्य जो कि प्राप्ति का जनक है, व्यक्ति को बार-बार कार्य करने की ओर प्रवृत्त करता है, मूर्ख व्यक्ति इसे कठिन समझ कर कार्य करना प्रारम्भ ही नहीं करता, जिसके कारण उसे किसी प्रकार की फल प्राप्ति नहीं हो पाती और उसका जीवन अत्यन्त तुच्छ बन कर रह जाता है, जिसमें न तो किसी प्रकार की कोई कामना पूर्ति होती है और न ही अपने आप को आगे बढ़ाने की इच्छा- शंक्ति। साधारण व्यक्ति कार्य को प्रारम्भ तो कर देते हैं, लेकिन एक-आध बार अधूरे मन से प्रयास करने के बाद उसे छोड़ देते हैं, ऐसे व्यक्तियों का जीवन दुर्भाग्यशाली ही कहा

जा सकता है, योग्य व्यक्ति जिस कार्य को भी हाथ में लेते हैं, उसे चाहे हजार बार प्रयत्न क्यों न करना पड़े, उस कार्य को पूरा करके ही रहते हैं, ऐसे ही व्यक्तियों को योग्यतम फल प्राप्ति होती है, ऐसे ही व्यक्ति सुखों को प्राप्त करते हैं।

सांसारिक सुख, वैभव, विलास, आनंद, प्रेम, सौन्दर्य- गृहस्थ के संबंध में विभिन्न प्रकार की भ्रान्तियां कुछ ऐसे ग्रंथों द्वारा दी गई हैं, जो कि सामान्य व्यक्ति को भ्रमित कर देती हैं, कुछ ग्रंथों में बार-बार वैराग्य, सांसारिक सुख से घृणा, जीवन - सुख के प्रति विपरीत भाव वर्णित किया गया है, जो कि मिथ्या ही कहा जा सकता है।

जिसने आनंद ही प्राप्त नहीं किया, वह आनंद का क्या वर्णन करेगा, जिसे सुंदरता का संसर्ग ही प्राप्त नहीं हुआ, वह सुंदरता का बखान नहीं कर सकता, जिसने गृहस्थ सुख नहीं भोगा वह गृहस्थ जीवन को मिथ्या कैसे कह सकता है? जिसने सांसारिक जीवन की सभी स्थितियां- योग्य पत्नी, सुंदर आवास, वाहन - सुख, संतान - सुख, कार्य - सुख नहीं भोगा वह गृहस्थ जीवन को नारकीय जीवन कैसे लिख सकता है? जिस प्रकार शक्कर, मधु को चखे बिना उसके स्वाद का वर्णन नहीं

किया जा सकता, उसी प्रकार जीवन के सभी सुखों को भोगे बिना उनकी परिपूर्णता का ज्ञान भी नहीं बताया जा सकता, आनंद को पूर्ण रूप से भोगने वाला व्यक्ति ही पूर्ण व्यक्ति है और वही योगी भी है।

अतः जीवन का यह प्रथम उद्देश्य एवं कर्त्तव्य है कि अपना एक लक्ष्य निर्धारित करो, इस लक्ष्य प्राप्ति के लिए कितनी ही साधनाएं क्यों न करनी पड़ें, कितनी ही बार प्रयत्न क्यों न करना पड़े, अपने लक्ष्य को अवश्य ही प्राप्त करना है, ऐसा दृढ़ निश्चय ही उन्नति का मूल मार्ग है।

जीवन में दुख, संकट, परेशानियां, बाधाएं, रोग, पीड़ा तो आएंगी ही, इन स्थितियों के बीच साधना को सम्पन्न करने से ही सिद्धि एवं सफलता मिल सकती है और जब एक-एक सफलता का द्वार खुलता जाता है, तो इतना अधिक उत्साह आ जाना चाहिए कि दूसरा द्वार खुल सके, सिद्ध साधक को जीवन में सुख, धन, सौन्दर्य, यश, सम्मान पूर्ण रूप से प्राप्त हो जाता है।

चंद्र ग्रहण (या किसी भी शुक्रवार को)

जीवन में कुछ ऐसे अवसर होते हैं जो बार-बार नहीं आते हैं, योग्य व्यक्ति उन अवसरों को भली-भांति

प्रयोग कर अपने जीवन में सफलता के द्वार खोल देते हैं, गया हुआ समय कभी वापस नहीं आता, जब अवसर बीत जाता है, तो मूर्ख व्यक्ति पछताते रहते हैं।

चंद्र ग्रहण का अवसर जीवन का ऐसा अवसर है, जिस दिन विशेष प्रकार की साधना करने वाले व्यक्ति को इस साधना के अवसर को गवां देना उसका दुर्भाग्य ही कहा जा सकता है, क्योंकि यह एक ऐसा स्वर्णिम अवसर है जिसमें साधक को पूर्ण रूप से साधना अवश्य संपन्न करनी चाहिए, जिससे उसे अपने जीवन में अपनी सभी इच्छाओं, लालसाओं की पूर्ति हो सके।

जब चंद्र ग्रहण होता है, तो समुद्र में ऐसी लहरें उठती हैं, मानों वे समुद्र से उठकर चंद्रमा को पकड़ लेंगी संपूर्ण वायुमण्डल में एक ऐसा कम्पन एवं शक्ति समा जाती है यह शक्ति ही साधना में सफलता प्राप्ति प्रदायक है, सामान्य समय में की जाने वाली एक माला मंत्र जप चंद्र ग्रहण के समय की जाने वाली सौ माला मंत्र जप के बराबर है।

लीलावती अप्सरा साधना

अप्सरा साधना के संबंध में विभिन्न प्रकार की भ्रान्तियां व्याप्त हैं, जो कि पूर्ण रूप से गलत हैं। अप्सरा साधना तो अपने-आप में पूर्णतः उच्च स्तर की साधना

है, जो कि जीवन में प्रेम, सौन्दर्य, रस और आनंद की कारक है।

प्रत्येक अप्सरा साधना का निर्धारित दिवस शुक्रवार है। शास्त्रकारों ने जब अलग - अलग अप्सराओं को मुहूर्त विशेष से भी सम्बन्धित करने का प्रयास किया तब लीलावती अप्सरा का सम्बन्ध चन्द्र ग्रहण से जोड़ा किन्तु यह कोई बाध्यता नहीं है। यह अवश्य है कि चन्द्र ग्रहण पर इस साधना को पुनः सम्पन्न करने से लीलावती प्रत्यक्ष होती ही है।

यह लीलावती अप्सरा सिद्ध होने के बाद साधक के वश में पूरे जीवन भर बनी रहती है, वैदिक काल से ही उच्चकोटि के ऋषियों, राजाओं, योगियों ने इस साधना को सिद्ध किया है।

साधना सिद्ध होने पर लीलावती अप्सरा प्रेमिका अथवा प्रिया रूप में जीवन भर साधक के सामने उपस्थित रहती है और साधक को प्रत्यक्ष दिखाई देती है, लेकिन दूसरे व्यक्ति उसे नहीं देख सकते और वह साधक के सभी कार्यों में पूर्ण रूप से सहायक रहती है।

यह साधना केवल प्रेमिका रूप में ही सिद्ध की जा सकती है, अतः साधना प्रारम्भ करने से पूर्व ही साधक के मन में यह चिन्तन अवश्य होना चाहिए कि

मैं लीलावती अप्सरा को प्रेमिका रूप में सिद्ध करना चाहता हूं, जिससे कि वह पूरे जीवन भर मुझे हर प्रकार का सहयोग एवं सुख प्रदान करती रहे।

इस साधना में सिद्धि प्राप्त हो जाने के पश्चात् साधक के चेहरे पर एक विशेष प्रकार का तेज, उत्साह एवं यौवन आ जाता है और रोग एवं बाधाएं उससे दूर रहती हैं।

साधना समय

इस साधना के लिए जो आवश्यक सामग्री चाहिए वह साधक को अपने साधना स्थान में पहले से ही रख देनी चाहिए, एक बार साधना प्रारम्भ कर देने के पश्चात् साधक को स्थान नहीं छोड़ना चाहिए।

साधना प्रयोग

लीलावती अप्सरा साधना पूर्ण रूप से सिद्धि प्राप्त करना है, सिद्धि प्राप्त करने का तात्पर्य यह है कि उस साधक को जीवन में कई प्रकार के भौतिक सुखों में वृद्धि, यौवन, सुख, सौन्दर्य एवं सौभाग्य की प्राप्ति होती है, साधक शाम को स्नान कर सुंदर, उत्तम प्रभावशाली सजे हुए वस्त्र धारण करें, और सुंदर पीले रंग के रेशमी आसन पर उत्तर की ओर मुंह करके बैठें,

पूजा स्थान में इत्र घी के दीपक तथा अच्छी खुशबू वाली अगरबत्ती अवश्य जलाएं, अपने सामने **"लीलावती अप्सरा यंत्र"**, लाल चावलों पर स्थापित करें, साथ ही सामने सुंदर **"अप्सरा चित्र"** भी हो।

सर्वप्रथम साधक यह ध्यान करे कि चंद्रमुखी पीले वस्त्रों को धारण करने वाली अमृत भाषिणी, सुगन्धित द्रव्यों के विलेप से सुगंधित शरीर वाली कान्तिमय, लीलावती अप्सरा मुझे सिद्धि प्रदान कर पूरे जीवन भर प्रेमिका रूप में ग्रहण कर मेरे जीवन को धन्य बनाए।

इस प्रकार का ध्यान कर साधक **"लीलावती माला"** को अप्सरा यंत्र पर अर्पित करे, इस विशेष माला का प्रयोग अत्यन्त आवश्यक है, यंत्र तथा माला के चारों ओर पुष्प वर्षा करे, उसके पश्चात् लीलावती अप्सरा मंत्र प्रारम्भ करे, इसमंत्र की २१ माला मंत्र जप पर्याप्त माना गया है।

लीलावती अप्सरा मंत्र

।। ॐ हुं लीलावती कामेश्वरी अप्सरा सिद्धि हुं हुं हुं।।

चंद्र ग्रहण की समाप्ति के साथ-साथ और मंत्र जप पूरा होते-होते साधक को अप्सरा प्रत्यक्ष रूप से

दिखाई देगी, तब साधक को चाहिए कि वह अप्सरा से अपने जीवन में पूर्ण सहयोग देने का वचन अवश्य ले और पूर्ण सिद्धि प्राप्त करने वाले साधकों को अप्सरा वचन अवश्य ही देती है।

जब भी साधक जीवन में लीलावती अप्सरा को बुलाना चाहे तो इस माला को गले में धारण कर ११ बार मंत्र जप करने से अप्सरा उसके सामने उपस्थित हो जाती है और उसके कार्य को पूर्ण करती है।

सौन्दर्य साम्राज्ञी मेनका

इन्द्र की सुंदरतम अप्सरा 'मेनका' अपने आप में सौन्दर्य की साम्राज्ञी है, सोलह वर्षीया चिर यौवनमयी मेनका को अपने वश में करने और उससे मनोवांछित धन द्रव्य और आनंद प्राप्त करने के लिए प्राचीन काल से साधक साधनाएं करते आए हैं और उन्होंने सफलताएं पाई हैं।

विश्वामित्र, गौतम , कणाद, पुलस्त्य और यहां तक कि भगवानकृष्ण, मत्स्येन्द्रनाथ गुरुगोरखनाथ तक ने भी मेनका को प्रियारूपेण सिद्ध कर सफलता प्राप्त की, जिससे जीवन भर मेनका को इन साधकों के वश में रहना पड़ा, अपने प्यार के साथ, सौन्दर्य के साथ, और अपने ऐश्वर्य के साथ। मेनका ने इन साधकों को धन, ऐश्वर्य, सम्मान, पद, प्रतिष्ठा और वैभव सब कुछ दिया, एक मामूली से

मामूली साधक ने भी इस साधना को संपन्न कर वह सब कुछ प्राप्त किया जिसकी कल्पना भी वह अपने जीवन में नहीं कर सकता था।

इस साधना की सबसे बड़ी विशेषता ही यह है कि इससे संसार की अद्वितीय सौन्दर्य शालिनी षोडशी इंद्र की अद्वितीय अप्सरा मेनका साधक को 'प्रिया' रूप में सिद्ध हो जाती है और जीवन भर उसके वश में बनी रहती है, साधक जो भी उससे चाहता है, वह सहर्ष प्रदान करती है और जीवन को आनंदमय बना देती है।

विश्वामित्र ने सबसे पहले तांत्रोक्त रूप से मेनका को सिद्ध किया और अपने आश्रम में हमेशा-हमेशा के लिए, पूर्ण साज-श्रृंगार के साथ, आंखों के सामने बने रहने के लिए विवश किया और मेनका ने विश्वामित्र के जीवन में इतनी खुशियां, इतना आनंद और इतना ऐश्वर्य प्रदान किया कि विश्वामित्र सही अर्थों में 'राजर्षि' कहलाए, राजा की तरह उन्होंने जीवन भोगा, आनंद लिया, ऐश्वर्य से अपने पूरे आश्रम को आनन्दित कर दिया पर इन सबसे उनकी तपस्या भंग नहीं हुई, इन सब से उन्हें किसी प्रकार का कोई दोष नहीं लगा, इससे उनकी साधना में किसी प्रकार की न्यूनता नहीं आई और इससे विश्वामित्र किसी भी प्रकार से लांछित नहीं हुए, अपमानित नहीं हुए, साधना में न्यून नहीं हुए, यही इस साधना की विशेषता है।

जब साधक इस साधना को सिद्ध कर लेता है, तो षोडस वर्षीया अद्वितीय सौन्दर्यमयी मेनका प्रेमिका के रूप में साधक के सामने आकर खड़ी हो जाती है, उससे प्रेमालाप करती है और साधक उससे जो भी चाहता है मेनका उसे प्रदान करती है, केवल एक दिन के लिए नहीं पूरे जीवनभर के लिए और ऐसा व्यक्ति सभी दृष्टियों से सम्पन्न सुखी और सही अर्थों में जीवन का आनन्द लेने वाला व्यक्तित्व बन जाता है।

मुझे नेपाल के राजगुरु श्रीयु त थापा जी से अत्यन्त जर्जर हस्तलिखित पुस्तक प्राप्त हुई थी, जो मेनका-सिद्धि से सम्बन्धित है और पूर्ण प्रामाणिक तथा असली है, यह वह पुस्तक है, जिसमें वह साधना अंकित है, जिसे विश्वामित्र ने सिद्ध किया था और लाभ उठाया था, यही नहीं अपितु इसके बाद अन्य कई साधकों ने ऋषियों, योगियों और उच्च कोटि के सन्यासियों ने इस गोपनीय विद्या को बड़ी कठिनाई से प्राप्त किया और साधना सिद्ध कर सफलता प्राप्त की।

यह विद्या अत्यन्त गोपनीय और दुर्लभ रही है, योगियों ने जीवन भर जंगलों की खाक छानी है, जीवन भर साधुओं और सन्यासियों की सेवा की है, उनकी लंगोटें धोई हैं और जीवन के अंतिम काल में जब उन्हें यह साधना प्राप्त हुई, तो उन्होंने अपने जीवन को सौभाग्यशाली माना है, उन्होंने साधना को संपन्न कर अपने बुढ़ापे को यौवन

में बदल दिया, निर्धनता को सम्पन्नता में बदल दिया, दरिद्रता को ऐश्वर्य में बदल दिया।

और मैं पाठकों के लाभार्थ इस अत्यधिक गोपनीय और महत्वपूर्ण साधना को प्रामाणिक रूप से प्रस्तुत कर रहा हूं, जिससे कि साधक इसका लाभ उठा सकें, अपने जीवन में मेनका को सिद्ध कर सकें और जीवन की पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकें।

प्रयोग - विधि

यह साधना किसी भी शुक्रवार से प्रारम्भ की जा सकती है और केवल आठ दिन की साधना है, शुक्रवार से प्रारम्भ कर अगले शुक्रवार को साधना समाप्त कर दी जाती है, यह रात्रिकालीन साधना है, रात को स्नान कर, पीली धोती, पीला रेशमी कुर्ता पहिने, बालों में सुगन्धित तेल लगाएं, कानों में इत्र का फोहा लगाएं और हो सके तो साधक स्वयं अपने गले में चमेली के पुष्प का हार धारण करे।

इसके बाद पीले आसन पर बैठ जाएं और सामने घी के पांच दीपक लगाएं सुगन्धित अगरबत्ती लगाएं और स्टील की प्लेट या चांदी की प्लेट में **"निश्चित मेनका सिद्धि यंत्र"** स्थापित कर दें, यह यंत्र अप्सरा मंत्र से सिद्ध और इंद्र मंत्र से कीलित हो, जिससे कि साधना में सफलता मिल सके, साथ

ही साथ यह मंत्र चैतन्य, प्राण प्रतिष्ठा युक्त और रत्न गर्भा हो।

इस यंत्र को प्लेट के मध्य में **"श्री"** अक्षर केसर से लिखकर उस पर इस यंत्र को स्थापित करें और फिर जल में इत्र मिलाकर उस पानी से यंत्र को धोएं, पोंछें फिर स्थापित करें और फिर उस पर केसर की सात बिंदियां लगाएं।

इसके बाद साधक की जितनी उम्र हो उतने गुलाब के पुष्प या फिर कोई भी पुष्प उस यंत्र पर चढाएं, उदाहरण के लिए अगर साधक की उम्र ५२ साल की हो तो ५२ गुलाब के पुष्प या ५२ कोई भी अन्य सुगन्धित पुष्प यंत्र पर चढ़ाएं, यदि किसी को अपनी निश्चित आयु ज्ञात नहीं हो तो मात्र २१ पुष्प चढ़ाएं।

इसके बाद इत्र मिश्रित **जल को दाहिने हाथ में ले कर संकल्प लें कि मैं अमुक नाम का व्यक्ति मेनका साधना सिद्ध करना चाहता हूं, जिससे कि वह प्रेमिका रूप में जीवन भर मेरे पास रहे और मैं जो भी आज्ञा दूं उसे पूरा करे।** इसके बाद उसके सामने दूध से बनी हुई मिठाई का भोग लगाएं, इलायची रखें, फिर हकीक माला जो कि मेनका सिद्धि मंत्र से चैतन्य और सम्पुटित हो, उससे मंत्र जप करें और मंत्र समाप्ति के बाद वहीं आसन के पास सो जाएं।

यदि रात्रि को कुछ घटनाएं घटें या कुछ दृश्य दिखाई दें या घुंघरुओं की आवाज सुनाई दे तो सुबह उठ कर किसी को कहें नहीं।

दिन भर कुछ भी कार्य करें मगर एक समय भोजन करें और ब्रह्मचर्य का पालन करें।

अगले शुक्रवार की रात्रि को एक सुंदर गुलाब के पुष्पों की माला अलग से लाकर रखें। जब साधक की ११ माला संपन्न होगी तो पूर्ण सज-धज, श्रृंगार के साथ अगर मेनका साधक के पास सुसज्जित वस्त्रों में आकर बैठे तो अपने पास पड़ा हुआ गुलाब का हार उसके गले में पहिना दें और मेनका के हाथ से हाथ मिलाकर यह वचन ले लें कि वह जीवन भर उसके वश में रहेगी और वह जो भी आज्ञा देगा वह पूरा करेगी।

मंत्र

ॐ सौन्दर्यमयी मेनकायै प्रिये फट्

यह मंत्र दिखने में छोटा है, परंतु अद्भुत प्रभावयुक्त है, यह प्रयोग सरल दिखाई देता है, परंतु इस मंत्र का निश्चित ही प्रभाव पड़ता है।

मुझे विश्वास है, कि पत्रिका का प्रत्येक पाठक इस प्रयोग को अवश्य ही सम्पन्न करेगा और सफलता प्राप्त करेगा।

अत्यन्त ही सुंदर कमनीय, बेंत की तरह चमकता हुआ सुंदर गोरा शरीर, लम्बी झील सी आंखें, अण्डाकार चेहरा, सुतवां नाक और पीठ पर फैले हुए काली घटाओं से बिखरे हुए बाल, सारे शरीर से एक अपूर्व सी मादक गंध मेरे नथुनों में आ रही थी और मैं आसन पर बैठा हुआ, सौन्दर्योत्तमा अप्सरा साधना से संबंधित मंत्र जप कर रहा था, साधना का आज अंतिम दिन था और मैं एकाग्रचित होकर मंत्र जप में तल्लीन था।

यद्यपि दरवाजा भिड़ा हुआ था फिर भी वह (सौन्दर्योत्तम अप्सरा) अचानक प्रगट हो कर धीरे-धीरे मेरे पास आकर बैठ गई, ऐसा सौन्दर्य, ऐसी सुगन्ध मैंने

अपने पूरे जीवन में अनुभव नहीं की थी और उसने अत्यन्त ही मुग्ध प्रणय दृष्टि से मेरी ओर देखा, ऐसा लगा कि जैसे मैं पिघलता जा रहा हूं और उसने दाहिनी भुजा बढ़ाकर मेरी कमर को अपने हाथ में ले लिया।

इस बात को आज ६ वर्ष बीत चुके हैं, परंतु सौन्दर्योत्तमा अप्सरा निरंतर मेरे सम्पर्क में है, और जब भी मैं आवाज देता हूं, वह तत्क्षण ही मेरे पास आ जाती है ऐसा लगता है कि मेरे जीवन में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं रही है, धन, यश, मान, पद, प्रतिष्ठा, ऐश्वर्य सभी दृष्टियों से मैं पूर्ण हो सका हूं।

- रामाश्रय शर्मा, जबलपुर

मेरी इच्छा अप्सरा साधना सम्पन्न करने की थी और मैंने सुन रखा था कि **रम्भा, उर्वशी, मेनका आदि से भी श्रेष्ठ और महत्वपूर्ण साधना सौन्दर्योत्तमा अप्सरा साधना है,** यदि उसकी विधि और उसको वश में करने का मंत्र प्राप्त हो जाए तो साधना सम्पन्न करने पर वह अवश्य ही पूर्ण रूप से प्राप्त हो जाती है और जीवन भर जो कुछ भी इच्छा होती है, वह निश्चय ही पूरी होती है, किसी प्रकार का अभाव या न्यूनता नहीं रहती।

और मैंने जीवन के मध्यकाल में इस साधना को सम्पन्न किया, यद्यपि यह साधना कुछ कठिन अवश्य

थी, इन्द्र की सर्वाधिक प्रिय अप्सरा को वश में करना कोई आसान काम नहीं होता, परंतु मुझे अपने गुरुदेव पर तथा अपने- आप पर पूरा भरोसा था, मैंने इसी साधना को सम्पन्न करने का निश्चय किया।

यह पांच दिन की साधना थी और पांचवीं रात्रि को जब मैं स्नान कर सुगंधित पदार्थ लगा कर साधना करने के लिए बैठा तो घण्टे डेढ़ घण्टे के बाद हल्की नूपुर की ध्वनि सुनाई दी, मेरे कान एक क्षण के लिए सतर्क हुए, फिर धीरे-धीरे, बार-बार नूपुर की ध्वनि नजदीक से नजदीक आती चली गई, ऐसा लगा कि कोई दूर से मेरी तरफ आ रहा है, फिर भी मैं अपने मंत्र जप में तल्लीन था।

अचानक कमरे का दरवाजा थोड़ा सा खुला और एक अत्यन्त ही सुंदर कमनीय षोडसी बाला कमरे में प्रकट हुई, लाल रंग का घाघरा, ऊपर धानी रंग की ओढ़नी ओढ़े हुए, सलीके से लम्बे बालों की वेणी गुंथी हुई, अण्डाकार चेहरा, ललाट पर दिप्-दिप् करती हुई लाल बिंदी, बड़ी और सुंदर कजरारी आंखें और सारा शरीर एक सुंदर आभा और प्रकाश से प्रकाशित होता हुआ, ऐसा लगा कि जैसे उसके सौन्दर्य से कमरे में हजारों- हजारों चन्द्रमा खिल गए हों, उसके शरीर से

निकलती हुई सुगंध पूरे वातावरण को एक अद्भुत सम्मोहन सा प्रदान कर रही थी।

मैं विचलित होने जा रहा था, सही कहूं तो मैं अपने- आपे में नहीं रहा था पर गुरुदेव की कठोर आज्ञा थी, कि किसी भी हालत में अपने आसन से उठना नहीं है और अपनी तरफ से कोई हरकत नहीं करनी है, इसलिए मैं अत्यन्त ही कठिनाई से अपने- आप को संयत किए हुए बैठा रहा।

वह षोडसी आगे बढ़ी और मुझसे सट कर बैठ गई, बोली - अब तो साधना पूरी हो गई है, अब किस के लिए माला घुमा रहे हो और फिर उसने अपनी भुजा मेरे गले में डाल दी।

पाठकों के लिए यह सब आश्चर्य चकित या कल्पना अनुभव हो सकती है, पर मेरे जीवन का तो यह यथार्थ है, इस घटना को सम्पन्न हुए पूरे पांच वर्ष हो गए पर इन पांच वर्षों में सौन्दर्योत्तमा अप्सरा ने मुझ जैसे अंकिचन को और दरिद्री को क्या कुछ नहीं दिया, धन, मान, पद सब कुछ तो उसका दिया हुआ है और वह भी अत्यन्त ही नम्रता- युक्त प्रेमिका के रूप में निरंतर मेरे साथ बनी रहती है।

- हरदेव शर्मा, बम्बई

मेरे जीवन का उद्देश्य साधना ही था और एक तरह से देखा जाए तो मैंने अपना पूरा जीवन साधना के क्षेत्र में ही बिता दिया था, इन साधनाओं के लिए जंगल-जंगल छान मारे, परंतु मुझे सही और प्रामाणिक साधनाएं मिलीं एक गृहस्थ गुरु से, और **आश्चर्य की बात तो यह है कि जीवन के बासठवें वर्ष में मुझे सौन्दर्योत्तमा अप्सरा साधना सम्पन्न करने का अवसर मिला।**

इस साधना को प्राप्त करने के लिए कालीदास, माघ, भारवी, विक्रम और गोरखनाथ जैसे व्यक्तियों ने भी अपने जीवन को दाव पर लगा दिया था, मैं भी जीवन के मध्यकाल से इस साधना को प्राप्त करने की इच्छा रख रहा था, परंतु ऐसा लगता था कि शास्त्रों में उर्वशी, मेनका या रम्भा साधनाएं तो विद्यमान हैं, परंतु इन्द्र प्रिया सौन्दर्योत्तमा अप्सरा साधना तो शायद लोप ही हो गई है, बंगाल और नेपाल तक की यात्राओं में भी मुझे इस साधना का प्रामाणिक विवरण प्राप्त नहीं हो सका।

मैं जब गुरुदेव से दीक्षा ले चुका तो एक दिन उनको प्रसन्न मुद्रा में देख कर इच्छा प्रगट की, कि मैं सौन्दर्योत्तमा अप्सरा साधना सम्पन्न करना चाहता हूं, उन्होंने एक क्षण मेरी ओर देखा और स्वीकृति दे दी,

साथ ही साथ इसकी पूरी विधि भी समझा दी।

यह पांच रात्रि की साधना है, चार दिन तो आराम से बीत गए, परंतु पांचवी रात्रि को जब मैं आधा जप सम्पन्न कर चुका, तो मुझे ऐसा लगा कि रह -रह कर मेरे कमरे में गुलाब के फूल की सुगन्ध के झोंके आ रहे हैं, सारा कमरा सुगंध से भर गया, ऐसा लगा कि पूरे कमरे में ताजे गुलाब ही गुलाब बिखर गए हों।

तभी अकस्मात कमरे में लम्बाई लिए हुए दुबली पर मांसल शरीर, आकर्षक चेहरा और घुटनों तक लम्बे बाल लिए अप्सरा-सी प्रगट हुई, यह कहां से आई किस प्रकार से आई, मैं कुछ कह नहीं सकता, क्योंकि दरवाजा तो अंदर से बंद था।

मंत्र जप करते- करते ही मैंने उसकी तरफ देखा तो लगा कि वास्तव में ही संसार का सारा सौन्दर्य ठिठक कर एक जगह खड़ा हो गया है, एक बार आंखें चेहरे पर जमीं तो हटने का नाम ही नहीं ले रही थीं, वास्तव में ही धूप की तरह सौन्दर्य, अत्यन्त ही आकर्षक और सम्मोहक चेहरा, मछलियों की तरह दो सुंदर आंखें, भरा हुआ सुंदर वक्षस्थल, अत्यन्त ही पतली मुठ्ठी में आने लायक कमर और सारा शरीर सांचे में ढला हुआ . . . वास्तव में ही एक अत्यन्त कमनीय नारी-शरीर मेरे सामने

खड़ा था।

मैं हठात नजरें घुमा कर मंत्र जप करने लगा तभी वह मेरे पास आकर बैठ गई और दोनों बाहें फैला कर मेरे पूरे शरीर को अपने बाहुपाश में जकड़ लिया, मैं एक बार तो सन्न रह गया, मेरे सारे शरीर में जैसे लावा बह रहा था, मैंने अनुभव किया कि मेरी साधना सफल हो चुकी।

दूसरे दिन जब मैं बाहर निकला तो सारे घर वाले मुझे देख कर आश्चर्य चकित थे, सिर पर सफेद बालों की जगह काले बाल आ गए थे, चेहरे की झुर्रियां मिट गई थीं और मैं ६२ साल का व्यक्ति मुश्किल से तीस वर्ष का जवान लग रहा था, रह- रह कर घर वाले मुझे छूते और आश्चर्य करते कि यह एक ही रात्रि में कायाकल्प कैसे हो गया।

बाद में मुझे मालूम पड़ा कि सौन्दर्योत्तमा के स्पर्श से ही स्वभावतः यह कायाकल्प हो गया है।

इस बात को कई वर्ष बीत चुके हैं, मेरे शरीर में अभी तक वैसा ही यौवन, जोश और आनंद है, मेरे जीवन में धन की तो कोई कमी ही नहीं रही, सौन्दर्योत्तमा अप्सरा ने जितना मुझे ला कर दिया है उससे सात पीढ़ियों तक भी यह धन समाप्त नहीं हो

सकता, इसके अलावा भी उसने मेरी सारी इच्छाओं को पूर्ण किया है।

- हरबंशराज, लखनऊ

मेरा जन्म मनाली के आगे वशिष्ठ आश्रम से थोड़ी ही दूर पर रोहतांग के रास्ते पर एक घर में हुआ, मेरे माता- पिता अत्यन्त गरीब थे, पर जब मैं बड़ी हुई तो स्वभावतः मेरा रुझान साधना की ओर हो गया और मैंने कई श्रेष्ठ साधनाएं सम्पन्न कीं।

दो वर्ष पहले मुझे गुरुदेव मिले और उनसे मैंने निवेदन किया कि मैं सौन्दर्योत्तमा अप्सरा साधना सम्पन्न करना चाहती हूं, उस समय गुरुदेव अपने परिवार के साथ मनाली घूमने के लिए आए थे, उन्होंने मुझे इस साधना को सम्पन्न करने की तो आज्ञा दी ही, साथ ही साथ इसकी पूरी विधि भी समझा दी।

मैंने इस साधना को प्रारम्भ किया, पांचवी रात्रि को जब मैं मंत्र जप में तल्लीन थी, मेरी आंखें बंद थीं, तो मैंने अपनी पीठ पर हल्का सा स्पर्श अनुभव किया, मेरी आंखें खुल गईं तो मैंने देखा कि एक अत्यन्त ही सुंदर बीस वर्षीया यौवनमयी नारी मेरे पास बैठी हुई है और उसके शरीर से अपूर्व सुगन्ध प्रवाहित हो रही है।

उसके चेहरे को देखकर मैं ठगी सी रह गई,

उसका सौंदर्य, उसका चेहरा और उसका सारा शरीर अपने- आप में अद्वितीय था, गुलाब की तरह कोमल और सौंदर्य का साकार पुंज देख कर यही भान होता था कि वास्तव में ही सौन्दर्य इसे कहते हैं, पृथ्वी पर तो ऐसा सौन्दर्य देखना ही दुर्लभ है।

मैंने जब तक मंत्र जप पूरा किया तब तक वह मुग्ध भाव से अपने घुटने पर ठोड़ी टिकाए मुझे देखती रही और जब मैं मंत्र जप करके उठी तो उसने दोनों बाहें फैला कर मुझे अपने बाहुपाश में जकड़ लिया, जैसे हम कई वर्षों पुरानी सहेलियां हों।

इस बात को डेढ़ वर्ष बीत चुका है, पर एक भी दिन ऐसा नहीं गया कि मेरे बुलाने पर वह नहीं आई हो, उसका सम्पर्क ही अपने- आप में आनन्द और मस्ती देने वाला है, जितने समय तक वह साथ रहती है उतना समय कैसे बीत जाता है, कुछ पता ही नहीं चलता, वक्त को तो जैसे पंख लग जाते हैं।

और उसकी वजह से ही मेरे जीवन की और मेरे परिवार की दरिद्रता हमेशा- हमेशा के लिए समाप्त हो गई, हमारे परिवार में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं रही, मेरे न मांगने पर भी वह निरंतर धन, द्रव्य, वस्त्र, आभूषण मुझे प्रदान करती ही रहती है, यदि कभी मैं

उससे न मिलूं तो ऐसा लगता है कि जैसे मैंने अपने जीवन की सारी पूंजी खो दी हो।

- हीनू - वशिष्ठ आश्रम-मनाली

ये कुछ पत्र हैं, जिन लोगों ने इस कलियुग में भी इस देव दुर्लभ साधना को सम्पन्न किया है और इसमें सफलता पाई है, साधना सम्पन्न हुए कई वर्ष बीतने के बाद भी किसी प्रकार के संबंधों में कमी या न्यूनता नहीं आई अपितु दिनों- दिन यह प्रगाढ़ता बढ़ती ही गई है।

वास्तव में ही संसार की सबसे दुर्लभ और महत्वपूर्ण सौन्दर्योत्तमा अप्सरा सिद्धि साधना है, जो भी साधक एक बार इसे सम्पन्न कर लेता है, उसके जीवन में किसी प्रकार की कोई न्यूनता नहीं रहती।

यह साधना अत्यन्त ही गोपनीय और महत्वपूर्ण है, इसकी सिद्धि के लिए महाषोढ़ा न्यास और विनियोग मान्य है, इसमें मूल रूप से (१) प्रपंच (२) भुवन (३) मूर्ति (४) मंत्र (५) देवता और (६) सौंदर्य प्रिया - इन छः न्यासों का समावेश किया जाता है।

मुझे यह दुर्लभ और गोपनीय प्रयोग कितनी कठिनाई से प्राप्त हुआ है, यह अपने- आप में एक अलग कहानी है, परंतु इस प्रयोग को मैंने कई शिष्यों को सम्पन्न कराया है और सभी को पूर्ण सफलता मिली है।

प्रयोग

इस साधना को पुरुष या स्त्री कोई भी सम्पन्न कर सकता है, इसमें कुल पांच बातों का ध्यान रखना चाहिए।

१. यह रात्रिकालीन साधना है और पांच दिन में यह साधना सम्पन्न की जाती है।

२. दिन को किसी प्रकार की नौकरी या व्यापार नहीं किया जा सकता और केवल सौन्दर्योत्तमा अप्सरा के बारे में ही चिन्तन किया जाना चाहिए।

३. इसमें किसी प्रकार का अन्य भोजन नहीं किया जाता, पहले दिन बादाम का हलवा घर पर बना कर पांच कौर लिए जाते हैं, दूसरे दिन दस कौर, तीसरे दिन पंद्रह कौर, चौथे दिन दस कौर तथा पांचवे दिन केवल पांच कौर लिए जाते हैं, इसके अलावा किसी प्रकार का कोई खाद्य पदार्थ साधक न खावे, पानी का प्रयोग जितनी बार भी वह चाहे कर सकता है। इस साधना में शराब, सिगरेट, आदि व्यसन का प्रयोग यथासम्भव नहीं करे।

४. रात्रि को लगभग ६ बजे के बाद स्नान करके सुंदर वस्त्र धारण करके आसन पर बैठ जाएं, इसमें किसी भी प्रकार के वस्त्र धारण किए जा सकते हैं, धोती - कुर्त्ता

या पैन्ट- शर्ट अथवा साड़ी, घाघरा- चुनरी मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि इस साधना में किसी प्रकार के वस्त्रों का बन्धन नहीं है, अत्यन्त सुंदर, आकर्षक वस्त्र धारण किए हुए हों और कपड़ों पर इत्र, सुगन्धित पदार्थ आदि लगावें, साधक चाहे तो अपने पास गुलाब के पुष्प रख सकता है या माला धारण कर सकता है।

५. साधना काल में सामने दुर्लभ **"सौन्दर्योत्तमा अप्सरा यंत्र"** और **"सौन्दर्योत्तमा अप्सरा चित्र"** किसी सुंदर पात्र में रख दें और उस को गुलाब जल से स्नान करावें, गुलाब का इत्र लगावें और नीचे गुलाब की या पुष्पों की पंखुड़ियां बिछाकर उस पर इस यंत्र को स्थापित करें, सामने घी के पांच दीपक लगाएं, ये पांचों दीपक मिट्टी के बने हुए हों, इसके बाद **सौन्दर्योत्तमा अप्सरा सिद्ध माला** से मंत्र जप करें, नित्य रात्रि को इक्यावन माला मंत्र जप होना आवश्यक है, मंत्र जप समाप्त होने के बाद वहीं धरती पर सुंदर, आनन्दयुक्त गद्दा या बिस्तरा बिछाकर उस पर सो जाएं, बिस्तर ज्यादा से ज्यादा सुंदर, आकर्षक एवं सुखमय हो।

प्रातः काल उठकर सुगन्धित निर्मल जल से स्नान करें, उत्तम कोटि के वस्त्र धारण करें, और सौन्दर्योत्तमा अप्सरा सिद्ध माला को गले में पहिनें रहें

और सौन्दर्योत्तमा अप्सरा का चिंतन करते रहें।

पांचवीं रात्रि को साधक सुगन्धित इत्र आदि लगा कर कमरे में इत्र का छिढ़काव कर आसन पर बैठे और मंत्र जप करे, मंत्र जप से पूर्व दो उत्तम कोटि की गुलाब की या अन्य फूलों की मालाएं ला कर रखे।

पांचों दिन सौन्दर्योत्तमा अप्सरा यत्रं के सामने उत्तम कोटि के भोग लगाए, भोग में मिठाई, खीर, पुड़ी, आदि विविध व्यंजन हों, सुबह उठ कर उस पदार्थ को स्वयं खा ले या छोटे-छोटे बालकों में उस पदार्थ को वितरित कर दे।

साधना समाप्ति के समय कमरे में धुंघुरुओं की आवाज आवे तो विचलित न हों, यदि अप्सरा खड़ी हुई दिखाई दे या पास में बैठ जाए तो किसी प्रकार की उतावली या अधीरता प्रदर्शित न करें और बराबर मंत्र जप पूरा करें, इक्यावन माला मंत्र जप पूरा हो जाने के बाद ही वार्तालाप करें।

वार्तालाप में अप्सरा जो भी प्रश्न करे, मधुरता और हास्य के साथ उसका जवाब दें, वार्ता समाप्ति पर उसको यह आदेश दे दें या उससे यह वचन ले लें कि वह अप्सरा जीवन भर साधक के साथ रहेगी, जब भी साधक बुलाएगा तब वह सुंदर, सुसज्जित वस्त्रों में

उपस्थित रहेगी और जो भी आज्ञा दी जाएगी उसको बिना नूनच किए कार्य करेगी, समय-समय पर द्रव्य, वस्त्र आदि मनोवांछित पदार्थ प्रदान करती रहेगी।

साधना सम्पन्न होने के बाद साधक को चाहिए कि जब भी वह अनुकूल एवं उचित अवसर समझे तो सौन्दर्योत्तमा अप्सरा को बुला सकता है, उसके लिए सुंदर वस्त्र पहिन कर शरीर पर तथा कपड़ों पर इत्र आदि सुगन्धित पदार्थ लगा कर केवल इक्यावन बार मंत्र उच्चारण करते ही अप्सरा उपस्थित होगी और वह अप्सरा तब तक साथ में रहेगी जब तक कि उसे जाने की आज्ञा नहीं दी जाएगी, पर इस बात का ध्यान रखें कि दिन में आठ - दस बार बुलाना, बेवजह तंग करना आदि उचित नहीं है, साधक को चाहिए कि वह जीवन भर भद्र पुरुष की तरह व्यवहार एवं मनोरंजन करे।

इस साधना की विशेषता यह है कि साधक जब भी सौन्दर्योत्तमा अप्सरा को मंत्र के द्वारा आह्वान करेगा तो वह मंत्र पूरा होते ही सामने खड़ी दिखाई देगी, उसको केवल साधक ही देख सकेगा, पास में अन्य भले ही कितने ही लोग हों उनको वह अप्सरा दिखाई नहीं देगी।

साधक अप्सरा के साथ प्रिया रूप से ही व्यवहार

रखे और वह यदि किसी भी प्रकार का पदार्थ, द्रव्य, धन आदि दे तो मना नहीं करें, बल्कि सहर्ष स्वीकार कर ले, साधक को वह स्पष्ट रूप से दिखाई देगी और स्पर्श करने पर वैसा ही लगेगा जैसा कि किसी को स्पर्श करने पर अनुभव होता है।

अप्सराएं नृत्य प्रवीण और देव संगीत सिद्ध होती हैं अतः जो साधक इसमें रुचि लेना चाहें, वे उसके द्वारा नृत्य और संगीत का आनंद ले सकते हैं।

प्रयोग

साधक सबसे पहले अपने सामने उससे संबंधित यंत्र और चित्र रख दे तथा दीपक जला ले, फिर सौन्दर्योत्तमा अप्सरा चित्र की पूजा करे, पूजा के लिए जिन - जिन शरीर के अंगों का उल्लेख हो, उन - उन अंगों को मन में चिन्तन करता हुआ, केसर से पूजन करे:

अं नारिकेल रूपायै श्रियै नमः - शिरसि
आं वासुकी रूपायै मायायै नमः - केशायै
इं सागर रूपायै कमलायै नमः - नेत्रे
ईं मत्स्य रूपायै नमः - भ्रमरे
उ मधुरायै नमः - कपोले
ऊं गुलाब पुष्पायै नमः - मुखे
एं गह्व रायै नमः - चिबुके

ऐं	पद्म पत्रायै नमः - अधरोष्ठे
ओं	दाड़िम बीजायै नमः - दन्तपंक्तौ
औं	हंसिन्यै नमः - ग्रीवायाम्
अं	पुष्प वल्लयै नमः - भुजायोः
अः	सूर्य चन्द्रमायै नमः - कुचे
कं	सागर प्रगल्भायै नमः - वक्षस्थलौ
खं	पीपल पत्रकायै नमः - उदरे
गं	वासुकी झील्यै नमः - नाभौ
घं	हस्ति सुंडायै नमः - जंघायै
च	सौन्दर्य रूपायै नमः - पादयोः
छं	हरिण मोहिन्यै नमः - चरणेषु
जं	विंशाल आकाशे नमः - नितम्बायै
झं	जगतमोहिन्यै नमः - रूपायै
टं	काम प्रियायै नमः - सर्वांगे
ठं	देव मोहिन्यै नमः - गत्यै
ड	विश्व सम्मोहनायै नमः - चितवन्यै
ढ़	अदोष रूपायै नमः - दृष्टयै
तं	अष्ट गन्धायै नमः - सुगन्धेषु
थं	देव दुर्लभायै नमः - प्रणयै
दं	सर्वमोहिन्यै नमः - हास्यै
धं	सर्वमंगलायै नमः - कोमलांग्यै

नं	धनप्रदायै नमः - लक्ष्म्यै
पं	देह सुखप्रदायै नमः हेमवत्यै
फं	काम क्रीड़ायै नमः - मधुरे
ब	देह सुखप्रदायै नमः - रत्यै
भं	आलिगनायै नमः - रूपायै
मं	रात्रौप्राप्त्यै नमः - गौर्यै
यं	भोगप्रदायै नमः - भोग्यै
रं	रतिक्रियायै नमः - अप्सरायै
लं	प्रणय प्रियायै नमः दिव्यांगनायै
वं	मनोवांछित प्रदायै नमः - योगरूपायै
शं	सर्वसुखप्रदायै नमः - रत्यै
षं	प्रणय क्रीड़ायै नमः - देव्यै
सं	जल क्रीड़ायै नमः - कोमलांगिन्यै
हं	देवस्वर्ग प्रदायै नमः - सौन्दर्योत्तमायै

इस प्रकार **सौन्दर्योत्तमा अप्सरा की अंग पूजा** सम्पन्न करने के बाद स्वयं की पूजा करें और शरीर के प्रत्यके अंग पर सुगंधित द्रव्य या इत्र हाथों में लेकर साधक उस - उस अंग का नाम उच्चारण करता हुआ, वह सुगन्धित द्रव्य या इत्र लगाए, उदाहरण के लिए **ममः सुगन्धित शिरसि** ऐसा कहकर सिर पर इत्र लगाए, ममः सुगन्धित मुखे - ऐसा कहकर मुख पर सुगन्धित द्रव्य

लगावे, इस प्रकार अपने पूरे शरीर के अंगों को स्पर्श करता हुआ और शरीर के समस्त अंगों पर इत्र या सुगन्धित पदार्थ लगाता हुआ, शब्दों का उच्चारण करे और स्वयं की पूजा करे।

इसके बाद हाथ में सुगन्धित जल लेकर विनियोग करें--

विनियोग

ॐ अस्य श्री सौन्दर्योत्तमा अप्सरा मंत्रस्य, कामदेव ऋषि पंक्तिश्छंदः काम क्रीड़ेश्वरी देवता, स सौन्दर्य बीजं, कं कामशक्तिः, अं कीलकम् आलिंगन श्री सौन्दर्योत्तमा अप्सरा सिद्धयर्थं रति सुख प्रदाय आजन्म प्रिया रूपेण सिद्धनार्थं मंत्र जपे विनियोगः ।

इसके बाद न्यास करें-

न्यास

ॐ अद्वितीय सौन्दर्यै नमः - शिरसि
ॐ काम क्रीड़ा सिद्धायै नमः - मुखे
ॐ आलिंगन सुखप्रदायै नमः - हृदि
ॐ देह सुख प्रदायै नमः - गुह्ये
ॐ आजन्म प्रियायै नमः - पादयोः
ॐ मनोवांछित कार्य सिद्धायै नमः - कर सम्पुटे

ॐ दारिद्र्य नाश्यै विनियोगाय नमः - सर्वांगे

इसके बाद साधक कर न्यास करे -

कर न्यास

ॐ सुभगायै नमः - अंगुष्ठाभ्यां
ॐ सौन्दर्यायै नमः - तर्जनीभ्यां
ॐ रति सुखप्रदायै नमः - मध्यमाभ्यां
ॐ देह सुख प्रदायै नमः - अनामिकाभ्यां
ॐ भोग प्रदायै नमः - कनिष्ठाभ्यां
ॐ आजन्म प्रणय प्रदायै नमः - करतलकर पृष्ठाभ्यां

इसके बाद साधक उस सुन्दर अप्सरा का आनंदयुक्त ध्यान करे।

ध्यान

हेमप्राकारमध्ये सुरविटपितले रत्नपीठाधिरूढ़ां,
यक्षीं बालां स्मरामः परिमल कुसुमोद्भासिधम्मिल्लभाराम्
पीनोत्तुंग स्तनाढ्य कुवलयनयनां रत्नकांचीकराम्यां
भ्राम द्भक्तोत्पलाभ्यां नवरविवसनां रक्तभूषांगरागाम्।

इसके बाद साधक मन में सौन्दर्योत्तमा अप्सरा का चिन्तन करते हुए मंत्र जप करे।

मंत्रा

ॐ आलिंगन रति प्रियाये सौन्दर्योत्तमा अप्सरा आगच्छ स्थिर्यै नमः । ।

साधक को नित्य रात्रि को इस मंत्र की इक्यावन माला मंत्र जप करना आवश्यक है, यदि साधक विशेष सिद्धि चाहे तो उसको चाहिए कि वह नित्य रात्रि को १०१ माला मंत्र जप करे।

जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है, मंत्र जप के बाद साधक चाहे कपड़े खोलकर, चाहे अनुकूल वस्त्र धारण कर वहीं पर बिछाए हुए सुंदर, सुखदायक बिछौने पर सो जाए, इस प्रकार पांच रात्रि प्रयोग करे।

वास्तव में ही यह अद्‌भुत और आश्चर्यजनक सिद्धिदायक प्रयोग है, यदि साधक पूर्ण श्रद्धा और नियमों के साथ यह प्रयोग सम्पन्न करता है, तो अवश्य ही उसे सफलता मिलती है।

Scanned by CamScanner